श्री अनार देवी खण्डेलवाल महिला पॉलिटेक्निक, मथुरा
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
कक्षा / सेमेस्टर – IV th Sem. (अंतिम वर्ष)
विषय का नाम – आई० पी० आर० (प्रायो०) – II
अध्यापक का नाम – धर्म वीर सिंह

Unit – Cataloguing of publication of corporate author-ship: Institution, Government and Conferences as per A.A.C.R. 2nd.

CONFERENCE – सम्मेलन

★ सम्मेलन :– A.A.C.R. 2nd की परिशिष्ट D में सम्मेलन की परिभाषायें दी गई है इसकी प्रथम परिभाषा के अनुसार "सम्मेलन व्यक्तिगत अथवा विभिन्न निकायों के प्रतिनिधियों की संगोष्ठी होती है, जिसमें उनके सामूहिक हित के मुद्दों पर विचार-विमर्श होता है। अथवा कार्य होता है।"

एक अन्य परिभाषा में कहा गया है कि, "सम्मेलन किसी समष्टि निकाय के प्रतिनिधियों की संगोष्ठी है जो निकाय का वैधानिक अथवा शासी अंग बनाती है।"

एक सामान्य परिभाषा के रूप में सम्मेलन के बारे में कहा जा सकता है कि, "जब किसी सामूहिक हित के मुद्दे पर समान विचारधारा वाले व्यक्ति किसी एक स्थल पर एकत्रित होते हैं और विचार विमर्श करते हैं तथा संभवतया किसी निष्कर्ष या परिणाम पर पहुँचते हैं, तो उसे सम्मेलन कहते हैं।"

सम्मेलन को अन्य नामों जैसे – सेमीनार, कार्यशाला, संगोष्ठी, अधिवेशन, सभा इत्यादि से भी जाना जाता है।

★ A.A.C.R. 2nd के अनुसार सम्मेलन के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन :–

इस सूची संहिता के अन्तर्गत सम्मेलन के शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के लिए उपयोगी नियमों का प्रावधान किया गया है। यदि किसी ग्रन्थ या प्रकाशन का प्रतिपादन सम्मेलन के द्वारा किया गया है तो A.A.C.R. 2nd के सामान्य नियम क्रमांक 21.1B1 के अनुसार सम्मेलन के नाम को शीर्षक के रूप में प्रविष्ट किया जायेगा। जैसे–

International religion conference (Varanasi) (1963).

उपरोक्त उदाहरण में उक्त सम्मेलन के आयोजन के स्थल/स्थान एवं वर्ष को अलग-2 कोष्ठक में प्रविष्ट किया गया है। शेष वरण एवं उपकल्पन को एक अन्य उदाहरण द्वारा इस प्रकार दर्शाया जा सकता है—

Scanned with CamScanner